राज कॉमिक्स

मूल्य ₹.00 संख्या 617

किलारी का रहस्य

भोकाल

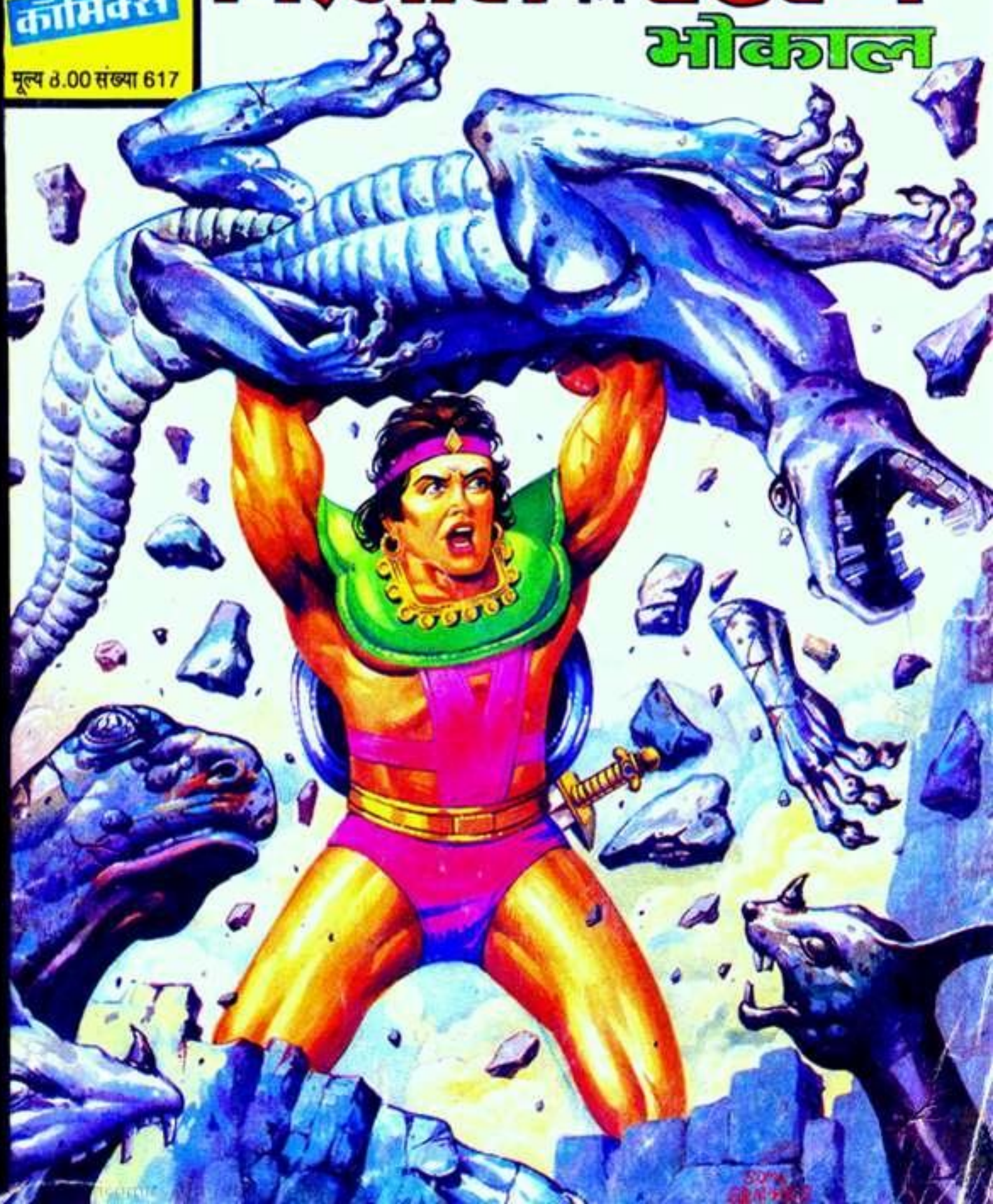

सम्पादक : मनीष गुप्ता
लेखक : संजय गुप्ता
चित्र : धीरज वर्मा, जसवंत सिंह नेगी

★ परीलोक का राजकुमार आलोप महाबुद्ध भोकाल की शक्तियों और आशीर्वाद से अजका नाम पुकारते बन जाता है... **भोकाल**

किलारी का रहस्य

महाबली भोकाल के कंठ से निकली थी वह दर्दनाक चीख जो किलासनगर के राजमहल की दरों-दीवारों के कलेजों को छलनी करती चली गई थी —

नहीं! नहीं!

लेकिन श्वेता ना उठी। उठा भोकाल...

...और उठकर भाग खड़ा हुआ।

तुरीन, शूतान, महाराज, कहां हो तुम सब? देखो, यहां क्या अनर्थ हो गया है।

श्वेता! तू नहीं मर सकती। तुझे कुछ नहीं हो सकता। उठ मेरी बच्ची, उठ! उठकर अपने प्यारे चाचा से प्यारी-प्यारी बातें कर। उठ श्वेता, उठ!

झंझोड़ डाला भोकाल ने मासूम श्वेता के निर्जीव शरीर को-

© Raja Pocket Books

http://indiancomics.info/vbu

http://indiancomics.info/vbu

http://indiancomics.info/vbu

दूर-दूर तक फैला विशाल अग्नि रेगिस्तान-

जिसके कण-कण को आकाश में स्थित सूर्य ने अंगारे की भांति तपा रखा था—

झुलस रही थी रेत...

और उस झुलसती रेत पर चलते भोकाल के कदम रेत के ताप से नहीं, बल्कि हलक में कांटे से उगा देने वाली प्यास से लड़खड़ा रहे थे-

ये अच्छा ही हुआ कि मैं अपना घोड़ा पीछे छोड़ आया वरना प्यास के कारण उसने तो तड़प-तड़प कर अपने प्राण ही त्याग दिये होते...

...लेकिन इस स्थिति में मैं भी कितनी देर जीवित रह सकता हूं। प्यास के मारे मेरा भी बुरा हाल है। और मंजिल है कि उसका कहीं नामोनिशान भी नहीं दिख रहा है।

उफ! जिस तरह मेरे कदम लड़खड़ा रहे हैं, उससे तो लग रहा है कि मैं अब गिरा... तब गिरा।

भोकाल ने तुरन्त ही खुद को सम्भाला-

नहीं! मुझे स्वयं को गिरने नहीं देना है, क्योंकि मेरे गिरने के साथ ही श्वेता, तुरीन, शूतान और महाराज के जीवन समाप्त हो जायेंगे।

भोकाल के कदमों में नयी शक्ति का नया संचार हुआ-

और उस समय तो वह 'संचार' दुगुना हो गया जब भोकाल को नजर आया—

पानी!

सूख कर पपड़ा गये होंठों पर अपनी सूखी जिह्वा फेरता भोकाल उधर ही भाग लिया—

http://indiancomics.info/vbu

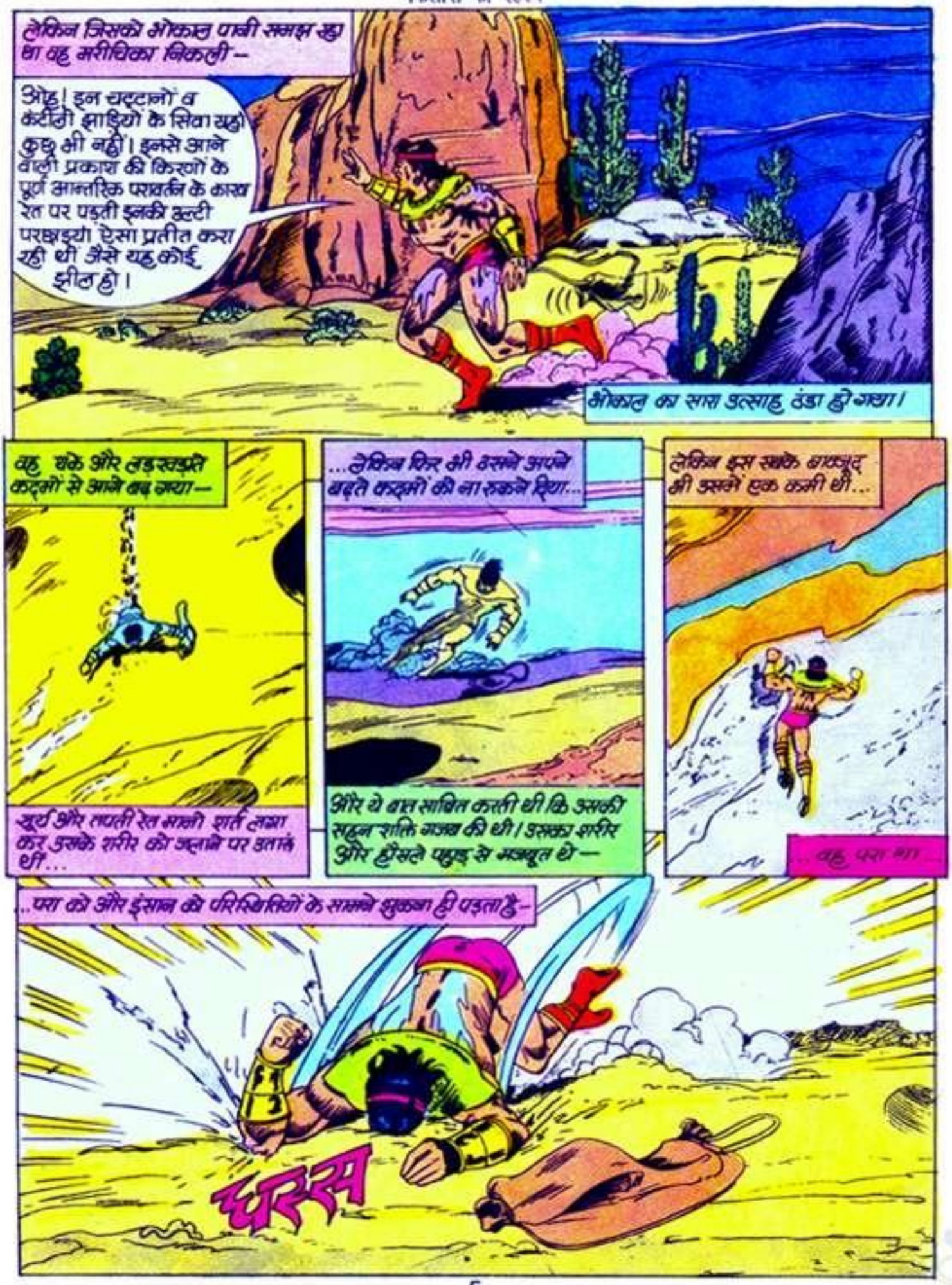

http://indiancomics.info/vbu

http://indiancomics.info/vbu

http://indiancomics.info/vbu

http://indiancomics.info/vbu

http://indiancomics.info/vbu

http://indiancomics.info/vb

...क्योंकि उसकी सोचों पर उसकी जरूरत हावी हो गई-

पानी! इतना हरा-भरा जंगल कभी उद्यान पानी के बिना नहीं हो सकता। मुझे पानी जरूर मिलेगा...

...यहीं कहीं ...अरे, ये पीछे आवाज कैसी?

तेजी से पीछे घूमा मोकल-

लेकिन जो घटने जा रहा था उसे घटने से वह ना रोक सका।

ओह! नहीं!

धड़ाम

जिस द्वार से मैं अन्दर आया था वह बन्द हो चुका है। इसका सीधा सा तात्पर्य है कि मैं किलारी योद्धाओं के जाल में फंस चुका हूं।

तुम्हारा सोचना ठीक है नौजवान...

...हम किलारी अपने शत्रुओं से इसी तरह निपटते हैं। अपने शत्रु को पहले अपने हाथों से मारने की बजाय हम उसे इस किले में बन्द कर देते हैं। आज तक हमने जितने भी शत्रु इस किले में बन्द किये हैं वो बाहर नहीं निकल पाए हैं क्योंकि...

...इस किले में मौजूद मौतों ने उसे निगल लिया है...

ओह! किलारी सरदार!

तुम भी इस किले से नहीं निकल पाओगे। इस किले में कदम-कदम पर फैली मौत तुम्हें कहीं ना कहीं अपना निवाला बना ही लेगी। हा हा हा

फिर किलारी सरदार का चेहरा उस मोखले से हट गया।

http://indiancomics.info/vbu

रह गया अकेला भोकाल –

इस रहस्यमयी किले में बन्द होने के साथ ही मैं एक भारी मुसीबत में फंस चुका हूं। लेकिन अब उन मुसीबतों के बारे में सोचना बेकार है। जो होगा, देखा जाएगा।

इसलिये फिलहाल तो मुझे अपनी प्यास बुझाने के लिए पानी और उस बक्से के बारे में सोचना चाहिये जिसके लिए मैं यहां आया हूं।

फिर आगे रह गया भोकाल...

...इस बात से बेखबर था कि किसी ने उसे खोज लिया था –

गुर्रर्रर्र

और–

गुर्रर्रर्र गुर्रर्रर्र

झपाक!

हल्की सी आहट पर चीते सा चौकन्ना भोकाल तुरन्त पलटा –

http://indiancomics.info/vbu

http://indiancomics.info/vbu

...जितना कि यह विशाल छिपकली भोकाल पर भारी पड़ गयी।–

ओफ्फ! मेरी तलवार से घायल होकर यह छिपकली मेरे ऊपर ही आ गिरी। इसके भारी वजन से तो मुझे अपनी हड्डियां टूटती प्रतीत हो रही हैं। मुझे तुरन्त ही इसे अपने ऊपर से हटाना होगा क्योंकि एक तो मेरी तलवार अभी तक इसके पेट में इस तरह धंसी हुई है कि निकल ही नहीं रही, ऊपर से घायल होने...

...की वजह से यह और अधिक भयंकर हो गयी है। ये कभी भी संभलकर मुझ पर प्राणघातक आक्रमण कर सकती है।

...अगर भोकाल उस छिपकली को अपने ऊपर से ना हटा पाता तो उसके महाबली कहलाने का लाभ ही क्या था।

अपनी समस्त शक्ति लगा कर भी...

छटपटाती दूर गिरी छिपकली को भोकाल ने और छटपटाने का अवसर ही नहीं दिया–

खच्चाक!

आखिरकार–

मर गई!

लेकिन ये छिपकली किसारी लोग लाए कहां से? ये तो सैकड़ों वर्ष पहले ही पृथ्वी से समाप्त हो गई थी!

http://indiancomics.info/vbu

http://indiancomics.info/vbu

http://indiancomics.info/vbu

http://indiancomics.info/vbu

दैत्य के साथ बीचे फिसले भोकाल के दिमाग ने तुरन्त ही उसे सचेत किया –

जिस दशा में मैं इस समय हूं उसमें मैं इस दैत्य से पहले जमीन से टकराऊंगा और ये भारी दैत्य मेरे ऊपर गिर कर मेरा कचमूर निकाल देगा !... इस स्थिति से बचने के लिये मुझे इसके ऊपर होना होगा !

अपनी अतीन्द्रिय शक्ति का सहारा लेकर भोकाल ने अपना सोचा कर दिखाया –

अब ठीक है ! अब मैं इस दैत्य के ऊपर हूं ! अब सबसे पहले इसकी वह गर्दन जमीन से टकराएगी जिसे मैंने अपनी शक्ति से पीछे की तरफ मोड़ दिया है !

फिर एक क्षण बाद ही –

गुड़प

दैत्य और भोकाल जहां गिरे थे वहां पानी जरूर था, लेकिन काफी कम मात्रा में ! इतनी कम मात्रा में कि दैत्य की गर्दन पानी के नीचे भी जमीन से टकरा कर टूटने से ना बच सकी !

http://indiancomics.info/vbu

http://indiancomics.info/vbu

http://indiancomics.info/vbu

http://indiancomics.info/vbu

http://indiancomics.info/vbu

http://indiancomics.info/vbu

भोकाल के लिये यह सोचने का नहीं, कुछ करने का समय था...

...और उसने किया भी..

मैं अपनी आंखों के सामने उस मासूम को मरते नहीं देख सकता। चाहे परिणाम कुछ भी हो।

भोकाल का उछाल भरा शरीर क्षण भर में ही बालक तक पहुंच गया

उसने लपक कर बालक को अपने एक हाथ की जकड़ में जकड़ा...

अब उसे खुद को और बालक दोनों की रक्षा था...

हिस्स

...जीभ लपलपाते उस भयंकर प्राणी से

और उसके लिये भोकाल ने सोचा यह उपाय-

अब-

खड्ड्याक

हिस्स

http://indiancomics.info/vbu

http://indiancomics.info/vbu

भोकाल उस बक्से को लेकर बालक को वहीं छोड़कर भाग लिया —

बक्से के मिलने की उत्तेजना में कुछ पलों के लिये मेरा ध्यान मेरी प्यास से हट गया है। अब इससे पहले ये प्यास मेरी जान ले ले, मुझे रेगिस्तान को पार कर लेना है।

लेकिन कुछ ही कदम भाग पाया था भोकाल कि ठिठक कर रह गया-

करण...

करण था। किलारी योद्धाओं की वह पूरी फौज जो रास्ता रोके भोकाल के सामने खड़ी थी।

ओह! सभी के हाथों में हथियार हैं और सभी के तेवर बता रहे हैं कि ये मुझ पर आक्रमण करने के लिए एकदम तैयार हैं...

...अब मेरा बचना एकदम असम्भव है, क्योंकि प्यास ने मेरे शरीर की समस्त शक्ति को हर लिया है।

परास्त हो चुके थे भोकाल के हौसले...

इधर किलारी सरदार ने भोकाल की तरफ कदम बढ़ा दिये-

सरदार मेरी तरफ बढ़ रहा है। अब वह अपने हाथ में थमे अस्त्र के एक ही वार से मेरी गर्दन मेरे धड़ से अलग कर मुझे मौत दे देगा!

भोकाल के पास पहुंच किलारी सरदार ने उसे दिया...

पानी!

!!

क्षण भर के लिये भोकाल भौंचक्का रह गया

http://indiancomics.info/vbu

फिर उसने किलारी सरदार के हाथों से सुराही झपट ली और-

गट गट गट

प्यास के साथ ही किलारी सरदार ने भोकल की जिज्ञासा भी शान्त की-

इस व्यवहार का कारण है, हमारा यह बालक अगर तुमने इसे बचाने के लिये अपनी जान को संकट में डालकर अद्भुत सहृदयता का परिचय ना दिया होता तो...

...छोड़ो, मित्रों से हम किलारी वाले शत्रुओं वाली भाषा नहीं बोलते!

अब चूंकि तुम हमारे मित्र हो इसलिये हम तुम्हें बहुत से उपहारों के साथ विदा करेंगे।

क्षमा करना सरदार! मुझे अपना उपहार मिल चुका है. ये बर्म्सा इस उपहार के आगे विश्व का हर उपहार मेरे लिये तुच्छ है।

भोकल तुरन्त ही वापस लौट पड़-

अब जल्दी से जल्दी राजमहल पहुंचकर बर्म्से को खोलकर उनकी आत्माओं को आजाद करा दूंगा!

समाप्त

http://indiancomics.info/vbu

संजय गुप्ता प्रस्तुत करते हैं-

चीतानगरी

भोकाल सीरीज की सुपर कॉमिक्स

राज कॉमिक्स में गोजो की अभूतपूर्व कॉमिक्स।

गोजो और घटोतकेतू

अश्वराज की एक और शानदार कॉमिक्स।

अश्वराज और रक्ताम्बर

http://indiancomics.info/vbu

यह विज्ञापन नहीं...आंधी है।

जी हां, जनाब, ये है आपका भेड़िया लेकिन आप को खोजना पड़ेगा कि भेड़िया कौन ?

भेड़िया की इस कॉमिक्स में आप मिलेंगे

कीजिए इन सब का दीदार भेड़िया की दिल दहला देने वाली कॉमिक्स में-

भेड़ियाकौन

ONLY RAJ COMICS

तुम को नागराज का रूप मैंने यानी प्रोफेसर नागमणि ने दिया है नागराज... और अगर मैं तुमको बनाने का तरीका जानता हूं, तो तुमको खत्म करने का रास्ता भी जानता हूं।
तुझे मारने के लिए चार तरह के जहरों का तेरे खून में मिलना जरूरी है। मेरे पैदा किए हुए दो जहरीले प्राणी तो तुझे काटकर गल गए। तीसरा तुझे काट रहा है। अब जब चौथा जहर तेरे खून में मिलेगा तो साथ ही साथ, तेरी आत्मा भी परमात्मा से मिल जाएगी।
नागमणि सच कह रहा है। इन तीन जहरों के मिश्रण से मेरे शरीर को लकवा सा मार गया है।...पर वह चौथ जहरीला प्राणी कौन है और कहां है?
अनुपम

...वह चौथा प्राणी जब नागराज के सामने आएगा तो नागराज के साथ, आप सबकी आंखें भी फटी रह जाएंगी।

नागराज का एक जहरबुझा विशेषांक
जो खोलेगा कई रहस्यों की परतें–

जहर

जापान आर्ट प्रेस, नई दिल्ली-28 द्वारा मुद्रित. ☎ 5708884

http://indiancomics.info/vbu

तुम्हारे लीडर मास्टर की यह धुआंधार पिटाई तुम लोगों को यह समझने के लिए काफी है कि न तो तुम मूषकराज के सामने ठहर सकते हो...
...और न ही मूषकराज की सेना के करोड़ों चूहों का मुकाबला कर सकते हो ! तुम्हारे पास कल तक का समय है...
...कल तक यह गटर खाली कर दो !
क्योंकि अब पूरे गटर पर राज्य करेगा...
ईयाया!

मूषकराज

कातिल चूहों और फाइटर टोड्स के टकराव का सुपर एटमी धमाका -

http://indiancomics.info/vbu

भोकाल ! यह क्या हो रहा है तुम्हें ? तुम्हारे बाल सफेद हो गए हैं। तुम बूढ़े हो रहे हो भोकाल !
तुम भी तो तुरीन ! तुम्हारे चेहरे पर झुर्रियां पड़ गई हैं, तुम भी बूढ़ी होती जा रही हो
यह हम तीनों ही तेजी से बूढ़े होते जा रहे हैं और कुछ ही क्षणों बाद हम बूढ़े होकर मर जाएंगे। उफ ! कैसा है यह...
मायाजाल
संजय गुप्ता पेश करते हैं।
भोकाल सीरीज का अत्यंत रोमांचक कॉमिक्स विशेषांक